International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण का अध्ययन

प्रोफेसर कविता मित्तल[1], चन्द्रावती चौहान[2]

[1]प्रोफेसर, षिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत
[2]षोधार्थी, षिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

सारांष

अध्ययन का शीर्षक 'उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण का अध्ययन' है। अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थीयों के स्व–प्रकटीकरण स्तर, स्व–प्रकटीकरण के विभिन्न पक्षों, लिंग–भेद के आधार पर स्व–प्रकटीकरण स्तर व आवासीय–क्षेत्र के आधार पर स्व–प्रकटीकरण स्तर का अध्ययन करना है। अध्ययन हेतू 661 विषयों का चयन किया गया जिसमें 358 छात्र एवं 303 छात्राएँ हैं तथा प्रमापीकृत स्व–प्रकटीकरण मापनी का प्रयोग किया गया है।

संकेत षब्दः स्व–प्रकटीकरण, उच्च माध्यमिक स्तर, प्रमापीकृत स्व–प्रकटीकरण मापनी, विभिन्न पक्ष, लिंग–भेद, आवासीय–क्षेत्र

समेकन

1ण उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण स्तर में विभिन्नता पायी जाती है। 40.39ः विद्यार्थियों में निम्न स्तर का स्व–प्रकटीकरण स्तर पाया गया है। 7.87ः विद्यार्थियों में अति उच्च स्तर का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है।

2ण उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण स्तर के विभिन्न पक्षों में विभिन्नता पायी जाती है।

3ण उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण के स्तर में लिंग–भेद के आधार पर सार्थक अन्तर पायी जाती है।

4ण उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण के स्तर में आवासीय–क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर पायी जाती है।

प्रस्तावना

स्व–प्रकटीकरण संप्रेषण की एक प्रकिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से स्वयं से संबंधित सूचनाओं की अभिव्यक्ति करता है। **सिडनी एम0 जूराई ;1958द्ध** के अनुसार ''स्व–प्रकटीकरण द्वारा व्यक्ति स्वयं के विषय में व्यक्तिगत सूचनाओं को उजागर दूसरे व्यक्ति को करता है, ताकि दूसरा व्यक्ति स्व–प्रकटीकरण करने वाले व्यक्ति को जान सके। "मसf.िपेबसवेनतम तममिते जव पसनिस कपेबसवेनतम वि चमतेवदंसलल तमसमअंदज पदवितउंजपवदए जीवनहीजे ंदक मिमसपदहेश ;अल्टमान एवं टेलरद्ध, 1973 व्यक्ति द्वारा स्व–प्रकटीकरण की आवश्यकता को **फिवर मॉडल** (थ्मअमत डवकमस) द्वारा समझा जा सकता है। अगर व्यक्ति अपनी सोच एवं अनुभवों को स्वयं तक ही सीमित रखता है तो इस प्रकिया में अधिक मानसिक कार्य करना पड़ता है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति में तनाव, दबाव तथा अतिव्यस्तता ;थ्मअमतद्ध की स्थिति उत्पन्न होती है। स्व–प्रकटीकरण द्वारा व्यक्ति के तनाव, दबाव तथा अतिव्यस्तता की स्थिति में कमी आती है तथा व्यक्ति लाभान्वित होते है। यदि स्व–प्रकटीकरण व्यवहार पुरस्कृत एवं लाभप्रद होता है तो यह व्यक्तियों के मध्य जुड़ाव ;बवददमबजमकदमेद्ध का कार्य करता है, जो व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। स्व–प्रकटीकरण के स्तर की जानकारी व्यक्ति को तीन प्रकार से होती है **प्रथम** व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्त किए गए विषयों की संख्या, **द्वीतिय** स्व–प्रकटीकरण के दौरान अभिव्यक्त किए गए विषयों की अंतरंगता, एवं **तृतीय** स्व–प्रकटीकरण के दौरान अभिव्यक्त किए गए विषयों पर सम्बधित चर्चा में दिए गए समय। स्व–प्रकटीकरण का संबंध व्यक्ति के स्वयं के विचार, सोच एवं अनुभवों से होता है तथा व्यक्ति के अन्दर यह द्वंद चलता रहता है कि वह स्वयं से संबंधित अंतरंग बातों की स्व–अभिव्यक्ति अपने प्रेमी, पति, मित्र, सहोदर भाई–बहिन या अभिभावक से करे या न करे। यह एक व्यक्तिगत निर्णय है जिसमें व्यक्ति द्वारा अपनी विचार एवं अनुभवों का प्रकटीकरण कहाँ, किससे, कब और कितनी मात्रा में करना है शामिल है। स्व–प्रकटीकरण की मात्रा अन्य व्यक्ति से प्रतिक्रिया प्राप्त करने पर भी निर्भर करती है।

स्व–प्रकटीकरण द्वारा व्यक्तिगत सूचनाओं, अनुभवों तथा विचारों को दूसरे व्यक्ति के साथ साझा किया जाता है, जिसके उपचारात्मक एवं मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से कई लाभ है। स्व–प्रकटीकरण एक लाभप्रद व्यवहार है जिसके द्वारा मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **पेनेवाकर (1990)** ने स्व–प्रकटीकरण के रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि के रूप में देखा। **ग्रीनवर्ग (1996)** ने स्व–प्रकटीकरण को श्वासनली में आने वाली समस्याओं में सुधार के रूप में जाना। **जूराई ग्रीनवर्ग एवं स्टोन (1992)** ने मनोवैज्ञानिक

समायोजन यथा मानसिक स्वास्थ्य, दक्षता, आत्मबल में वृद्धि, सामाजिक अनुकूलन हेतु कम से कम एक व्यक्ति के साथ स्व–प्रकटीकरण को एक आवश्यक शर्त के रूप में देखा। **लेवी–वेल्ज एवं अन्य. (2019)** ने अध्ययन में पाया कि ट्रॉमा (ज्तंनउं) से बाहर निकलने एवं पूर्ववत सामान्य स्थिति प्राप्त करने में स्व–प्रकटीरकण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। **स्टीफेन (2007)** ने शोध अध्ययन में पाया कि स्व–प्रकटीकरण द्वारा शिक्षार्थी अधिक समायोजन कर पाते हैं तथा उनके तनाव स्तर में कमी आती है। इसके विपरीत स्व–प्रकटीकरण की कम मात्रा का संबंध मनोविकृति के विस्तार यथा मानसिक बीमारी, चिंता, आत्मसम्मान में कमी, अकेलापन, विद्वेष, जीवन में असंतोष से है। **लेवी एवं अन्य. (2008)** ने कम स्व–प्रकटीकरण का संबंध आत्मघाती व्यवहार के साथ भी देखा।

वर्तमान समय में विद्यार्थी के तनाव, चिंता, असंतोष, अकेलापन में वृद्धि के कारण आत्मघाती कदम उठा रहे हैं ऐसी घटनाएँ आए दिन हमें सूनने को मिलती है। अतः विद्यार्थी में स्व–प्रकटीकरण के स्तर में वृद्धि से विद्यार्थियों को आत्मघाती कदम उठाने से रोका जा सकता है। विद्यार्थी द्वारा किए गए स्व–प्रकटीकरण द्वारा वे स्वयं को दूसरे व्यक्तियों से संबंधित महसूस करेंगे तथा अकेलापन, विद्वेष, जीवन में असंतोष की भावना से छुटकारा प्राप्त हो सकेगी। अतः विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण के स्तर को जानने हेतु यह अध्ययन **'उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का अध्ययन'** किया गया हैं।

अध्ययन के उद्देष्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण का अध्ययन करना
   - विद्यार्थी स्व–प्रकटीकरण के स्तर का अध्ययन करना
   - विद्यार्थी स्व–प्रकटीकरण के स्तर का विभिन्न पक्षों में अध्ययन करना
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीरण का निम्न सन्दर्भों में अध्ययन करना
   - लिंग–भेद के सन्दर्भ में
   - आवासीय–स्थिति के सन्दर्भ में

परिकल्पनाएँ

प्रथम उद्देश्य से सम्बन्धित अग्र परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया हैः

1.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीरण स्तर के सन्दर्भ में विभिन्नता पायी जाती है।

1.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीरण स्तर के विभिन्न पक्षों के सन्दर्भ में विभिन्नता पायी जाती है।

द्वितीय उद्देश्य से सम्बन्धित अग्र परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया हैः

2.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण के स्तर में लिंग–भेद के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पायी जाती है।

2.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण के स्तर में आवासीय –क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पायी जाती है।

अध्ययन के चर

(1) स्वतंत्र चर
;पद्ध लिंग–भेद ;पपद्ध आवासीय–क्षेत्र
;2द्ध आश्रित चर
;पद्ध स्व–प्रकटीकरण

सम्प्रत्य की संक्रियात्मक परिभाषा

स्व–प्रकटीकरण – प्रस्तुत अध्ययन में स्व–प्रकटीकरण से तात्पर्य सामाजिक, शारीरिक, मनौवैज्ञानिक तथा शैक्षिक संदर्भ में स्वयं के विचारों की अभिव्यक्ति से है।

उच्च माध्यमिक स्तर – प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 11वीं में नियमित रूप से अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

लिंग–भेद – प्रस्तुत अध्ययन में लिंग–भेद से तात्पर्य कक्षा 11वीं में अध्ययनरत छात्र तथा छात्राओं से है।

आवासीय–क्षेत्र – प्रस्तुत अध्ययन में आवासीय क्षेत्र से तात्पर्य विद्यार्थियों के ग्रामीण एवं शहरी आवासीय स्थिति से है।

अध्ययन विधि

अध्ययन में निर्धारित उद्देश्य व समस्या की प्रकृति के आधार पर सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन के लिए बिहार राज्य के पटना जिले को चयनित किया गया है।

न्यादर्शन

न्यादर्श चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि को प्रयुक्त किया गया है। न्यादर्श की संख्या 661 है।

उपकरण

डॉ0 विरेन्द्र सिन्हा द्वारा निर्मित प्रमापीकृत स्व–प्रकटीकरण इंवेन्ट्री का प्रयोग उपकरण के रूप में किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं समेकन

1. विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण के स्तर संबंधी प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, सारणीयण एवं विश्लेषण:

विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का स्तर – उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की स्व–प्रकटीकरण सम्बन्धी समस्त प्रदत्तों के आधार पर विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीरण के स्तर का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण अग्र रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1.1

विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का स्तर

विद्यार्थी प्रसन्नता का स्तर	विद्यार्थीयों में स्व–प्रकटीकरण स्तर	
	छ	:
अति उच्च स्तर	04	0ण61
उच्च स्तर	52	7ण87
सामान्य स्तर	144	21ण79
निम्न स्तर	264	40ण39
अति निम्न स्तर	194	29ण34

तलिका 1.1 से ज्ञात होता है कि 29ण34: विद्यार्थियों में अति निम्न स्तर का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है, तथा 40.39: विद्यार्थियों में निम्न स्तर का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है। सामान्य स्तर का स्व–प्रकटीकरण 21ण79: विद्यार्थीयों में पाया गया है जबकि 7ण87: का स्व–प्रकटीकरण उच्च स्तर एवं अति उच्च स्तर पर विद्यार्थियों में 0ण61: का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है।

विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण के विभिन्न पक्ष – उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का स्व–प्रकटीकरण के विभिन्न पक्षों से संबंधित समस्त प्रदत्तों के आधार पर विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण के स्तर का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण अग्र रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1.2

विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण के विभिन्न पक्ष

विद्यार्थी स्व–प्रकटीकरण के स्तर	स्व–प्रकटीकरण के विभिन्न पक्ष							
	मुद्रा मध्यांक–54	व्यक्तित्व मध्यांक–51	अध्ययन मध्यांक–71	शरीर मध्यांक–56	अभिरूचि मध्यांक–65	विचार मध्यांक–65	व्यवसाय मध्यांक–61	सेक्स मध्यांक–24
उच्च स्व–प्रकटीकरण	239	238	184	253	190	170	221	62
निम्न स्व–प्रकटीकरण	422	423	477	408	471	491	440	599

तलिका 1.2 द्वारा प्रस्तुत विद्यार्थियों का स्व–प्रकटीकरण के विभिन्न पक्षों के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण के स्तर सम्बन्धी प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण अग्र प्रकार प्रस्तुत है :

मुद्रा – मुद्रा पक्ष से संबंधित स्व–प्रकटीकरण के स्तर के संदर्भ में पाया गया है कि सर्वेक्षण में शामिल 661 न्यादर्श में 239 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का उच्च स्तर पाया गया जबकि शेष 422 विद्यार्थियों में निम्न स्व–प्रकटीकरण पाया गया है।

व्यक्तित्व – व्यक्तित्व पक्ष से संबंधित स्व–प्रकटीकरण के स्तर के संदर्भ में पाया गया है कि सर्वेक्षण में शामिल 238 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का उच्च स्तर पाया गया एवं 423 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का निम्न स्तर पाया गया है।

अध्ययन – अध्ययन पक्ष से संबंधित स्व–प्रकटीकरण के संदर्भ में पाया गया है कि सर्वेक्षण में शामिल उच्च माध्यमिक स्तर के 184 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का उच्च स्तर पाया गया है जबकि 477 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का निम्न स्तर पाया गया है।

शरीर – शरीर पक्ष से संबंधित स्व–प्रकटीकरण के संदर्भ में पाया गया है कि सर्वेक्षण में शामिल उच्च माध्यमिक स्तर के 253 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का उच्च स्तर एवं 408 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का निम्न स्तर पाया गया है।

अभिरूचि – अभिरूचि पक्ष से संबंधित स्व–प्रकटीकरण के संदर्भ में पाया गया है कि सर्वेक्षण में शामिल 661 न्यादर्श में 190 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का उच्च–स्तर पाया गया है जबकि 471 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का निम्न स्तर पाया गया है।

विचार – विचार पक्ष से संबंधित स्व–प्रकटीकरण के संदर्भ में पाया गया है कि सर्वेक्षण में शामिल 170 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का उच्च स्तर पाया गया है जबकि 491 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का निम्न स्तर पाया गया है।

व्यवसाय – व्यवसाय पक्ष से संबंधित स्व–प्रकटीकरण के संदर्भ में पाया गया है कि सर्वेक्षण में शामिल 221 विद्यार्थियों में उच्च स्व–प्रकटीकरण पाया गया है एवं निम्न स्व–प्रकटीकरण का स्तर 440 विद्यार्थियों में पाया गया है।

सेक्स – सेक्स पक्ष से संबंधित स्व–प्रकटीकरण के संदर्भ में पाया गया है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर किए गए सर्वेक्षण में शामिल 661 विद्यार्थियों के न्यादर्श में 62 विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का उच्च स्तर पाया गया है। निम्न स्व–प्रकटीकरण का स्तर 599 विद्यार्थियों में पाया गया है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का विभिन्न संदर्भों में स्व–प्रकटीकरण स्तर

विद्यार्थियों में लिंग–भेद, एवं आवासीय–क्षेत्र के संदर्भ में स्व–प्रकटीकरण सम्बन्धी प्राप्त प्रदत्तों के प्रस्तुतीकरण व विश्लेषण को अग्र बिन्दुओं के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है।

विद्यार्थियों में लिंग–भेद के संदर्भ में स्व–प्रकटीकरण का स्तर – छात्र–छात्राओं में स्व–प्रकटीकरण सम्बन्धी प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण व विश्लेषण तालिका 1.3 द्वारा प्रस्तुत किया गया है :

तलिका 1.3
विद्यार्थियों में लिंगवार स्व–प्रकटीकरण का स्तर

विद्यार्थी स्व–प्रकटीकरण का स्तर	लिंगवार स्व–प्रकटीकरण स्तर			
	छात्र		छात्राएँ	
	छ	:	छ	:
अति उच्च स्तर	2	0ण्6	2	0ण्7
उच्च स्तर	43	12	9	3
सामान्य स्तर	103	28ण्8	41	13ण्5
निम्न स्तर	174	48ण्6	93	30ण्7
अति निम्न स्तर	36	10	158	52ण्1

तलिका 1.3 से अवगत होता है कि 0.6: छात्र में अति उच्च स्तर का स्व–प्रकटीकरण एवं 0.7: छात्राओं में अति उच्च स्तर का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है। 12: छात्रों एवं 3: छात्राओं में उच्च स्तर का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है। 28.8: छात्रों एवं 13.5: छात्राओं में सामान्य स्तर का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है। निम्न स्तर का स्व–प्रकटीकरण 48.6: छात्रों में तथा 30.7: छात्राओं में पाया गया है। 10: छात्रों में अति निम्न स्तर का स्व–प्रकटीकरण एवं 52.1: छात्राओं में अति निम्न स्तर का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है। छात्राओं में अति उच्च स्तर 0.7: तथा अति निम्न स्तर 52.1: का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है।

तलिका 1.4
लिंग–भेद के संदर्भ में विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण में अन्तर का सार्थकता स्तर

ळमदकमत	छ	ड	ँव	कf	ब्जंपदमक ज.अंसनम	ज.जंइसम अंसनम		ँपहदपपिबंदबम स्मअमस
छात्र	358	370ण098	116ण196	659	1ण96	0ण01	2ण58	
छात्रा	303	387ण634	113ण316			0ण05	1ण96	

तलिका 1.4 से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के स्व–प्रकटीकरण का मध्यमान 370.098 व प्रमाप विचलन 116.196 है तथा छात्राओं के स्व–प्रकटीकरण का मध्यमान 387.634 तथा प्रमाप विचलन 113.316 है। प्राप्त माध्यों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य
1.96 है। कf659 पर टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.58 तथा 0.05 स्तर पर 1.96 है टी–का प्राप्त मूल्य 1.96 है। जो कि टी के सारणी मूल्य के बराबर है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के स्व–प्रकटीकरण में सार्थक अन्तर पाया गया है।

परिकल्पना 2.1: 'उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण के स्तर में लिंग–भेद के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पायी जाती है'।
दिए गए विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत परिकल्पना अस्वीकृत होती है। छात्र–छात्राओं के स्व–प्रकटीकरण में सार्थक अन्तर–पाया गया है।

;पद्ध **विद्यार्थियों के आवासीय–क्षेत्र के आधार पर स्व–प्रकटीकरण स्तर** –उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आवासीय–क्षेत्र के संदर्भ में स्व–प्रकटीकरण के स्तर संबंधी प्रदत्तों का सारणीयन व विश्लेषण अग्र रूप में किया गया है:

तलिका 1.5
विद्यार्थियों में आवासीय – क्षेत्रवार स्व–प्रकटीकरण का स्तर

विद्यार्थी स्व–प्रकटीकरण का स्तर	आवासीय–क्षेत्रवार स्व–प्रकटीकरण स्तर			
	शहरी		ग्रामीण	
	छ	:	छ	:
अति उच्च स्तर	3	0ण6	.	.
उच्च स्तर	42	8ण1	6	4ण2
सामान्य स्तर	133	25ण7	34	23ण8
निम्न स्तर	285	55	64	44ण7
अति निम्न स्तर	55	10ण6	39	27ण3

तालिका 1.5 से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर 10.6: शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में अति निम्न स्तर का स्व–प्रकटीकरण स्तर पाया गया है तथा 27.3: ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का अति निम्न स्तर पाया गया है। 55: शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में निम्न स्तर का स्व–प्रकटीकरण स्तर तथा 44.7: ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में निम्न–स्तर का स्व–प्रकटीकरण स्तर पाया गया है। 25. 7: शहरी आवासीय–क्षेत्र के विद्यार्थियों में सामान्य स्तर का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है एवं 23.8: ग्रामीण आवासीय–क्षेत्र के विद्यार्थियों में स्व–प्रकटीकरण का सामान्य स्तर पाया गया है। शहरी आवासीय क्षेत्र के 8.1: विद्यार्थियों में उच्च स्व–प्रकटीकरण स्तर पाया गया है जबकि 4.2: ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में उच्च स्व–प्रकटीकरण स्तर पाया गया है। उच्च माध्यमिक स्तर के 0.6: विद्यार्थियों में अति उच्च स्तर का स्व–प्रकटीकरण पाया गया है जबकि ग्रामीण आवासीय क्षेत्र के विद्यार्थियों में अति उच्च स्तर का स्व–प्रकटीकरण स्तर का : नगण्य रहा है।

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

तालिका 1.6

आवासीय–क्षेत्र के संदर्भ में विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण में अन्तर का सार्थकता स्तर

त्मेपकमदजपंस	छ	ड	ॅक	कि	ब्ृजंपदमक ज.अंसनम	ज.जंइसम अंसनम		ैपहदपपिबंदबम स्मअमस
शहरी	518	372ण73	114ण7	659	5ण73	0ण01	2ण58	छे
ग्रामीण	143	398ण73	114ण4			0ण05	1ण96	

तलिका 1.6 से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण का मध्यमान 372.73 व प्रमाप विचलन 114.7 है तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 398.73 व प्रमाप विचलन 114.4 है। दोनों माध्यों के अन्तर की सार्थकता का टी–मूल्य 5.73 प्राप्त हुआ है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.58 तथा 0.05 स्तर पर 1.96 है। तालिका के अनुसार प्राप्त टी–मूल्य 5.73 है जो कि टी–के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी आवासीय क्षेत्र एवं ग्रामीण आवासीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है।

परिकल्पना 2.2 : 'उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण के स्तर में आवासीय–क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पायी जाती है।'

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना 2.2 अस्वीकृत होती है। शहरी आवासीय–क्षेत्र व ग्रामीण आवासीय–क्षेत्र के विद्यार्थियों के स्व–प्रकटीकरण स्तर में सार्थक अन्तर है।

अनुशंसा

1ण प्रस्तुत अध्ययन कक्षा ग्प् वर्ग के विद्यार्थियों पर किया गया है। इसी प्रकार का अध्ययन अन्य कक्षाओं में भी किया जाए।

2ण प्रस्तुत अध्ययन बिहार राज्य के पटना जिला में किया गया है। इसी प्रकार का अध्ययन बिहार राज्य के अन्य जिलों एवं भारत के अन्य राज्यों में भी किया जाए।

3ण प्रस्तुत अध्ययन में लिंगवार आवासीय क्षेत्रवार पर आधारित न्यादर्श का चयन किया गया है इसमें आर्थिक स्थितिवार आधार पर अध्ययन को शामिल किया जाए।

4ण प्रस्तुत अध्ययन राजकीय विद्यालय में प्रशासित किए गए। इस प्रकार का अध्ययन नीजि विद्यालयों में भी किया जाए।

5ण प्रस्तुत अध्ययन में चार–स्व–प्रकटीकरण है जिसका प्रशासन विद्यार्थियों पर किया गया। इसी प्रकार का अध्ययन शिक्षकों, प्रधानाचार्य, अभिभावकों इत्यादि पर भी प्रशासित किया जाए।

6ण इसी प्रकार का अध्ययन बड़े न्यादर्श (1000) पर किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ

पुस्तकें

1ण **गुप्ता, एस. पी. (2005).** *सांख्यिकी विधियाँ,* शारदा पुस्तक भवन.

2ण **करलिंगर, एफ. एन. (1983).** *फाउनडेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च.* सिरजीत पब्लिकेशन.

3ण **मार्गन, सी. टी. (1965).** *फिजियोलॉजिकल साइकोलॉजी* ;3तक मकण्द्ध मैकग्रो–हिल्स.

4ण **नेलसन, आर. जे. (2009).** *इंट्रोटक्सन टू काउसलिंग स्किल्स टेक्स्ट एण्ड एक्टीविटिज* ;3तक मकण्द्ध सेज पाब्लिकेशन.

5ण **रिवस, ए. (2019).** *एन इंट्रोडक्सन टू काउनसलिंग एण्ड साइकोथेरेपी फ्रॉम थ्योरी टू प्रैक्टीस.* सेज पब्लिकेशन.

6ण **ग्लैडिंग, टी. एस., एवं बत्रा, पी. (2018).** *काउसलिंग ए कम्प्रीहेन्सीव प्रोफेशन* ;5जी मकण्द्ध पियरसन इंडिया एजूकेशन सर्विसेज.

वेवलिंक्स

1ण ीजजचेरूध्ध्ूूण्हववहसमण्बवउध्मंतबीघ्ुत्रेमस्िकिपेबसवेनतम–वुत्रेमस्िकिपेबसवेनतम–हेत्रऋसबतचत्रम्र्हरंभ्श्रअईॅन्लबकहह ।म्न्ल्व्प ।ठक्ष्ळ।म्फ ।ठप ।ठक्ष्ळ।प्फ ।ठप ।ठक्ष्ळ।डफ ।ठप ।ठक्ष्ळ।फफ ।ठप ।ठक्ष्ळ।न्फ ।ठप ।ठक्ष्ळ।ल्फ ।ठप ।ठक्ष्ळ।बफ ।ठप ।ठक्ष्ळ।हफ ।ठप ।ठक्ष्ळ।ाफ ।ठप ।ठछप्ठध्ज्4डज ।3ंरठुछझहध् ।स्-।ध्।फ–ेवनतबमपकत्रबीतवउम–पमत्रन्ज्थ्.8

2ण ीजजचेरूध्ध्ूण्अमतलूमससउपदकण्बवउधिवू.कवमें.मसि.किपेबसवेनतम.पदसिनमदबम.तमसंजपवदेीपचे.4122387

3ए ाजजचेरूध्ध्ूण्उपदकजववसेण्बवउध्ंहत7ल2अध्मसा.किपेबसवेनतम

4ए ाजजचेरूध्ध्चवेपजपअमचेलबीवसवहलण्बवउध्मसा.किपेबसवेनतम.पद.बवनदेमसपदहध्

5ए ाजजचेरूध्ध्ूेपउचसलचेलबीवसवहलण्वतहध्वि.कवमै.मसा.किपेबसवेनतम.पदसिनमदबम.तमसंजपवदेीपचेणीजउस

6ए ाजजचेरूध्ध्ूण्हववहसमण्बवउध्मंतबीध्बंत्रऋमेअत्रा4883601ा9िइ8क.ेगेतत्रि ।ब्ध्दख्बम्च्गीत्ठउउजसझह.क्ग2कन्े5ैम्जीूरू1740290766612.ुत्रैमसा.कपेबसवेनतम्.पद्.बवनदेमससपदह.ेंत्रग.अमकत्र2ीन्झर्मूरचेलदाछउस ।गॅसे1ल्ठभ्फ.4श्रचाफ1फश्र6ठ ाीझम ।म्.इपूत्र1280.इपीत्र541.कचतत्र1ए5

7ए ाजजचेरूध्ध्ूण्हववहसमण्बवउध्मंतबीध्बंत्रऋमेअत्रा4883601ा9िइ8क.ेगेतत्रि ।ब्ध्दख्बम्च्गीत्ठउउजसझह.क्ग2कन्े5ैम्जीूरू1740290766612.ुत्रैमस्किपेबसवेनतम्कमपिदपजपवद्चेलबीवसवहल्मगंउचसम.ेंत्रग.अमकत्र2ीन्झर्मूरचेलदाछउस ।गॅसे1ल्ठभ्फ.4श्रचाफ1फश्र6ठ ाीसम ।म्.इपूत्र1280.इपीत्र541.कचतत्र1ए5

8ए ाजजचेरूध्ध्ूण्इमतामसमलूमससइमपदहण्बवउध्मसा.किपेबसवेनतमणीजउस